Gyan Manthan
Journal homepage: www.gyanmanthan.org ISSN: **3108-3455**

आर्थिक विकास में ग्रामीण महिला उद्यमियों की भूमिका का विश्लेषणात्मक अध्ययन : धार, झाबुआ एवं अलीराजपुर जिलों के विशेष संदर्भ में

सीमा शाह[1] , शोधार्थी , वाणिज्य विभाग, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर

डॉ. अनिल शर्मा[2] , सहायक प्राध्यापक , वैष्णव वाणिज्य महाविद्यालय, इंदौर

सारांश

ग्रामीण क्षेत्रों में महिला उद्यमिता आर्थिक विकास, रोजगार सृजन तथा सामाजिक सशक्तिकरण का एक महत्वपूर्ण माध्यम बनती जा रही है। विशेष रूप से आदिवासी बहुल क्षेत्रों में महिलाओं द्वारा संचालित लघु एवं सूक्ष्म उद्यम स्थानीय अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य मध्यप्रदेश के धार, झाबुआ एवं अलीराजपुर जिलों में ग्रामीण महिला उद्यमियों की आर्थिक विकास में भूमिका का विश्लेषण करना है। इस अध्ययन के लिए कुल 150 ग्रामीण महिला उद्यमियों का चयन किया गया, जिनमें प्रत्येक जिले से 50 महिला उद्यमियों को शामिल किया गया। प्राथमिक आंकड़े प्रश्नावली तथा साक्षात्कार के माध्यम से एकत्रित किए गए। आंकड़ों के विश्लेषण के लिए प्रतिशत, आवृत्ति वितरण, काई-स्क्वायर परीक्षण (Chi-square test) तथा टी-परीक्षण (t-test) का उपयोग किया गया। अध्ययन के परिणाम दर्शाते हैं कि ग्रामीण महिला उद्यमिता स्थानीय स्तर पर रोजगार सृजन, आय वृद्धि तथा पारिवारिक आर्थिक सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण योगदान देती है। काई-स्क्वायर परीक्षण से यह पाया गया कि शिक्षा स्तर और उद्यमिता सफलता के बीच महत्वपूर्ण संबंध है। वहीं टी-परीक्षण से यह स्पष्ट हुआ कि तीनों जिलों में महिला उद्यमियों की औसत आय में सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर पाया जाता है। अध्ययन से यह

निष्कर्ष निकलता है कि यदि ग्रामीण महिला उद्यमियों को प्रशिक्षण, वित्तीय सहायता और बाजार तक पहुँच उपलब्ध कराई जाए तो वे क्षेत्रीय आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।

प्रस्तावना

आर्थिक विकास की प्रक्रिया में उद्यमिता का महत्वपूर्ण स्थान है। उद्यमिता न केवल रोजगार के अवसरों का सृजन करती है बल्कि यह क्षेत्रीय विकास तथा आय के वितरण में भी महत्वपूर्ण योगदान देती है। वर्तमान समय में महिलाओं की आर्थिक गतिविधियों में भागीदारी निरंतर बढ़ रही है, जिससे महिला उद्यमिता आर्थिक सशक्तिकरण का एक प्रभावी माध्यम बनती जा रही है। मध्यप्रदेश के धार, झाबुआ और अलीराजपुर जिले मुख्यतः आदिवासी बहुल क्षेत्र हैं जहाँ आर्थिक विकास की गति अपेक्षाकृत धीमी रही है। इन क्षेत्रों में महिलाओं की भूमिका परंपरागत रूप से घरेलू कार्यों तक सीमित रही है, किन्तु हाल के वर्षों में स्वयं सहायता समूहों (Self Help Groups), सूक्ष्म वित्त योजनाओं तथा विभिन्न सरकारी कार्यक्रमों के माध्यम से महिलाएँ उद्यमिता गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेने लगी हैं। ग्रामीण महिला उद्यमिता मुख्यतः कृषि आधारित उद्योग, हस्तशिल्प, दुग्ध उत्पादन, खाद्य प्रसंस्करण तथा छोटे व्यापारों से संबंधित है। इन गतिविधियों के माध्यम से महिलाएँ न केवल अपने परिवार की आय में वृद्धि करती हैं बल्कि स्थानीय स्तर पर रोजगार सृजन में भी योगदान देती हैं। अतः ग्रामीण महिला उद्यमिता आर्थिक विकास के साथ-साथ सामाजिक परिवर्तन का भी एक महत्वपूर्ण साधन बन सकती है। इसी दृष्टिकोण से प्रस्तुत अध्ययन में धार, झाबुआ एवं अलीराजपुर जिलों के विशेष संदर्भ में ग्रामीण महिला उद्यमियों की भूमिका का विश्लेषण किया गया है।

GYAN MANTHAN
A MULITIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

शोध-साहित्य अध्ययन (साहित्य समीक्षा)

महिला उद्यमिता और ग्रामीण आर्थिक विकास पर अनेक विद्वानों ने अध्ययन किया है। शुम्पीटर (1934) ने उद्यमिता को आर्थिक विकास का प्रमुख साधन माना और बताया कि नवाचार एवं नए उद्यम आर्थिक प्रगति को गति प्रदान करते हैं। इसी प्रकार बोस (1953) ने भारतीय ग्रामीण

अर्थव्यवस्था में महिलाओं की भूमिका का अध्ययन करते हुए बताया कि ग्रामीण महिलाएँ घरेलू उद्योगों और कृषि गतिविधियों के माध्यम से स्थानीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। देवकी जैन (1980) ने अपने अध्ययन में महिला सशक्तिकरण और आर्थिक भागीदारी के संबंध को स्पष्ट किया तथा बताया कि महिलाओं की आर्थिक गतिविधियों में भागीदारी से सामाजिक स्थिति में सुधार होता है। भारत में महिला उद्यमिता के विकास पर देसाई (1999) ने अपने अध्ययन में बताया कि महिला उद्यमियों के विकास में शिक्षा, प्रशिक्षण और वित्तीय सहायता महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। नायर (2005) ने ग्रामीण महिला उद्यमिता का विश्लेषण करते हुए पाया कि स्वयं सहायता समूह (Self Help Groups) महिलाओं को स्वरोजगार और उद्यमिता के लिए प्रोत्साहित करते हैं। दत्ता और गायकवाड़ (2007) के अध्ययन में यह पाया गया कि ग्रामीण क्षेत्रों में महिला उद्यमिता गरीबी उन्मूलन और आय वृद्धि का प्रभावी माध्यम है। इसी प्रकार कुंवर और सिंह (2010) ने बताया कि सूक्ष्म वित्त (Microfinance) योजनाएँ महिला उद्यमिता के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। आदिवासी क्षेत्रों में महिला उद्यमिता पर भी कई महत्वपूर्ण अध्ययन किए गए हैं। पांडे (2012) ने मध्यप्रदेश के आदिवासी क्षेत्रों में महिला उद्यमिता का अध्ययन करते हुए पाया कि सरकारी योजनाओं और प्रशिक्षण कार्यक्रमों से महिलाओं की आर्थिक भागीदारी में वृद्धि हुई है। शर्मा और वर्मा (2014) ने ग्रामीण महिला उद्यमिता और आर्थिक सशक्तिकरण के संबंध का अध्ययन किया और बताया कि महिला उद्यमिता से परिवार की आय और जीवन स्तर में सुधार होता है। गुप्ता (2015) ने यह निष्कर्ष निकाला कि ग्रामीण महिलाओं को बाजार, वित्तीय संसाधनों और तकनीकी प्रशिक्षण की उपलब्धता उद्यमिता विकास के लिए आवश्यक है। हाल के वर्षों में महिला उद्यमिता और क्षेत्रीय विकास के संबंध में कई नए अध्ययन सामने आए हैं। कुमार (2017) ने ग्रामीण महिला उद्यमियों के आर्थिक योगदान का अध्ययन करते हुए पाया कि महिलाएँ स्थानीय स्तर पर रोजगार सृजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। मिश्रा (2018) ने बताया कि महिला उद्यमिता ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक परिवर्तन और लैंगिक समानता को बढ़ावा देती है। पाटिल और देशमुख (2019) ने अपने अध्ययन में पाया कि महिला उद्यमियों को वित्तीय सहायता और प्रशिक्षण उपलब्ध कराने से उनकी आय और व्यवसायिक

GYAN MANTHAN
A MULITIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

सफलता में वृद्धि होती है। सिंह और यादव (2020) ने ग्रामीण महिला उद्यमिता और आर्थिक विकास के संबंध का अध्ययन करते हुए निष्कर्ष निकाला कि महिला उद्यमिता ग्रामीण विकास की प्रक्रिया को गति देती है। इसी प्रकार शर्मा (2021) और तिवारी (2022) ने बताया कि महिला उद्यमिता आर्थिक सशक्तिकरण के साथ-साथ सामाजिक परिवर्तन का भी महत्वपूर्ण माध्यम बन रही है। इन सभी अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि महिला उद्यमिता ग्रामीण आर्थिक विकास, रोजगार सृजन और सामाजिक सशक्तिकरण के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। विशेष रूप से आदिवासी बहुल क्षेत्रों में महिला उद्यमिता के विकास से क्षेत्रीय आर्थिक विकास को गति मिल सकती है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध पद्धति का उपयोग किया गया है। अध्ययन का क्षेत्र मध्यप्रदेश के धार, झाबुआ एवं अलीराजपुर जिले हैं। अध्ययन के लिए कुल 150 ग्रामीण महिला उद्यमियों का चयन किया गया, जिनमें प्रत्येक जिले से 50-50 उत्तरदाताओं को शामिल किया गया। उत्तरदाताओं का चयन सरल यादृच्छिक नमूना पद्धति के माध्यम से किया गया। अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आंकड़ों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक आंकड़े प्रश्नावली एवं साक्षात्कार के माध्यम से तथा द्वितीयक आंकड़े पुस्तकों, शोध पत्रों और सरकारी रिपोर्टों से प्राप्त किए गए हैं। आंकड़ों के विश्लेषण के लिए प्रतिशत, काई-स्क्वायर परीक्षण (Chi-square) तथा टी-परीक्षण (t-test) जैसे सांख्यिकीय उपकरणों का उपयोग किया गया है।

GYAN MANTHAN
A MULITIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

अध्ययन के उद्देश्य

1. धार, झाबुआ एवं अलीराजपुर जिलों में ग्रामीण महिला उद्यमियों की आर्थिक विकास में भूमिका का अध्ययन करना।
2. ग्रामीण महिला उद्यमिता के विकास में शिक्षा एवं आय स्तर के प्रभाव का विश्लेषण करना।

परिकल्पनाएँ

H1: ग्रामीण महिला उद्यमियों के शिक्षा स्तर और उद्यमिता सफलता के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है।

H2: धार, झाबुआ एवं अलीराजपुर जिलों की महिला उद्यमियों की औसत आय में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

तालिका 1

जिला-वार उत्तरदाताओं का वितरण

जिला	उत्तरदाता	प्रतिशत
धार	50	33.3
झाबुआ	50	33.3
अलीराजपुर	50	33.3
कुल	150	100

GYAN MANTHAN
A MULITIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

तालिका 1 में अध्ययन क्षेत्र के अंतर्गत चयनित जिलों के आधार पर उत्तरदाताओं का वितरण दर्शाया गया है। अध्ययन में कुल 150 ग्रामीण महिला उद्यमियों को शामिल किया गया है, जिनमें धार, झाबुआ तथा अलीराजपुर जिलों से समान रूप से 50—50 उत्तरदाताओं का चयन किया गया है। प्रत्येक जिले का प्रतिशत 33.3 प्रतिशत है, जिससे स्पष्ट होता है कि अध्ययन में तीनों जिलों का प्रतिनिधित्व समान रूप से सुनिश्चित किया गया है। इस प्रकार उत्तरदाताओं का संतुलित चयन अध्ययन के परिणामों को अधिक विश्वसनीय एवं तुलनात्मक विश्लेषण के लिए उपयुक्त बनाता है।

तालिका 2

महिला उद्यमियों के प्रमुख व्यवसाय

व्यवसाय	संख्या	प्रतिशत
कृषि आधारित उद्योग	42	28
हस्तशिल्प	36	24
दुग्ध उत्पादन	28	18.7
खाद्य प्रसंस्करण	26	17.3
लघु व्यापार	18	12
कुल	150	100

तालिका 2 में ग्रामीण महिला उद्यमियों के प्रमुख व्यवसायों का विवरण प्रस्तुत किया गया है। तालिका के अनुसार 42 उत्तरदाता (28 प्रतिशत) कृषि आधारित उद्योगों से जुड़े हुए हैं, जो कि सबसे अधिक है। इसके बाद 36 उत्तरदाता (24 प्रतिशत) हस्तशिल्प कार्यों में संलग्न हैं। वहीं 28 महिला उद्यमी (18.7 प्रतिशत) दुग्ध उत्पादन से संबंधित कार्य कर रही हैं तथा 26 महिला उद्यमी (17.3 प्रतिशत) खाद्य प्रसंस्करण गतिविधियों में लगी हुई हैं। इसके अतिरिक्त 18 महिला उद्यमी (12 प्रतिशत) लघु व्यापार से जुड़ी हुई हैं। इससे स्पष्ट होता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में महिला उद्यमिता मुख्यतः कृषि आधारित गतिविधियों तथा पारंपरिक हस्तशिल्प कार्यों पर आधारित है, जो स्थानीय संसाधनों और कौशल के उपयोग को दर्शाता है।

GYAN MANTHAN
A MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

तालिका 3

शिक्षा स्तर एवं उद्यमिता सफलता (Chi-square test)

शिक्षा स्तर	कम सफलता	मध्यम सफलता	उच्च सफलता	कुल
प्राथमिक	16	12	6	34
माध्यमिक	14	20	12	46
उच्च माध्यमिक	6	16	18	40
स्नातक एवं अधिक	2	10	18	30
कुल	38	58	54	150

Chi-square value = 11.92, df = 6, $p < 0.01$

तालिका 3 में महिला उद्यमियों के शिक्षा स्तर और उद्यमिता सफलता के बीच संबंध को दर्शाया गया है। तालिका के अनुसार प्राथमिक शिक्षा स्तर की 34 महिला उद्यमियों में से 16 को कम सफलता, 12 को मध्यम सफलता तथा 6 को उच्च सफलता प्राप्त हुई है। माध्यमिक शिक्षा स्तर की 46 महिला उद्यमियों में से 14 को कम सफलता, 20 को मध्यम सफलता तथा 12 को उच्च सफलता प्राप्त हुई है। इसी प्रकार उच्च माध्यमिक शिक्षा प्राप्त 40 महिला उद्यमियों में से 6 को कम सफलता, 16 को मध्यम सफलता और 18 को उच्च सफलता प्राप्त हुई है। वहीं स्नातक एवं उससे अधिक शिक्षा प्राप्त 30 महिला उद्यमियों में से केवल 2 को कम सफलता, 10 को मध्यम सफलता तथा 18 को उच्च सफलता प्राप्त हुई है। काई-स्क्वायर परीक्षण के परिणाम ($\chi^2 = 11.92$, $df = 6$, $p < 0.01$) से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा स्तर और उद्यमिता सफलता के बीच सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण संबंध पाया जाता है। अर्थात उच्च शिक्षा प्राप्त महिला उद्यमियों की सफलता का स्तर अपेक्षाकृत अधिक है। इस प्रकार प्रस्तुत परिकल्पना (H1) अस्वीकृत की जाती है।

GYAN MANTHAN
A MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

तालिका 4

जिलों के आधार पर महिला उद्यमियों की औसत मासिक आय (t-test)

जिला	औसत आय (₹)	SD	N
धार	22,400	5,200	50
झाबुआ	20,800	4,900	50
अलीराजपुर	19,600	4,600	50

t value = 3.24, $p < 0.05$

तालिका 4 में धार, झाबुआ और अलीराजपुर जिलों की महिला उद्यमियों की औसत मासिक आय का तुलनात्मक विवरण प्रस्तुत किया गया है। तालिका के अनुसार धार जिले की महिला उद्यमियों की औसत मासिक आय ₹22,400 पाई गई है, जबकि झाबुआ जिले में यह ₹20,800 तथा अलीराजपुर जिले में ₹19,600 है। इससे स्पष्ट होता है कि तीनों जिलों में महिला उद्यमियों की आय में कुछ अंतर पाया जाता है। टी-परीक्षण के परिणाम ($t = 3.24$, $p < 0.05$) यह दर्शाते हैं कि तीनों जिलों के बीच महिला उद्यमियों की औसत आय में सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर मौजूद है। इसका अर्थ है कि विभिन्न जिलों की आर्थिक परिस्थितियों, बाजार की उपलब्धता तथा उद्यम के प्रकार के आधार पर आय में भिन्नता देखने को मिलती है। अतः प्रस्तुत परिकल्पना (H2) अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य मध्यप्रदेश के धार, झाबुआ एवं अलीराजपुर जिलों में ग्रामीण महिला उद्यमियों की आर्थिक विकास में भूमिका का विश्लेषण करना था। अध्ययन में कुल 150 ग्रामीण महिला उद्यमियों को शामिल किया गया, जिनमें प्रत्येक जिले से 50—50 उत्तरदाताओं का चयन किया गया। अध्ययन के परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि ग्रामीण महिला उद्यमिता स्थानीय स्तर पर आय वृद्धि, रोजगार सृजन तथा सामाजिक सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है।

अध्ययन के आंकड़ों के अनुसार महिला उद्यमियों के प्रमुख व्यवसायों में कृषि आधारित उद्योग का प्रतिशत सर्वाधिक (28 प्रतिशत) पाया गया, जिसमें 42 महिलाएँ संलग्न थीं। इसके पश्चात 36 महिलाएँ (24 प्रतिशत) हस्तशिल्प कार्यों में, 28 महिलाएँ (18.7 प्रतिशत) दुग्ध उत्पादन में, 26 महिलाएँ (17.3 प्रतिशत) खाद्य प्रसंस्करण गतिविधियों में तथा 18 महिलाएँ (12 प्रतिशत) लघु व्यापार में संलग्न पाई गईं। इससे यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में महिला उद्यमिता मुख्यतः स्थानीय संसाधनों और पारंपरिक कौशल पर आधारित गतिविधियों पर केंद्रित है। शिक्षा स्तर और उद्यमिता सफलता के बीच संबंध का परीक्षण करने के लिए काई-स्क्वायर परीक्षण का उपयोग किया गया। परिणामों के अनुसार काई-स्क्वायर का मान ($\chi^2 = 11.92$, $df = 6$, $p < 0.01$) प्राप्त हुआ, जो सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण है। इससे यह स्पष्ट होता है कि महिला उद्यमियों के शिक्षा स्तर और उनकी उद्यमिता सफलता के बीच महत्वपूर्ण संबंध मौजूद है। अध्ययन में यह भी पाया गया कि उच्च शिक्षा प्राप्त महिला उद्यमियों में सफलता का स्तर अपेक्षाकृत अधिक है। इस प्रकार प्रस्तुत परिकल्पना H1 को अस्वीकृत किया गया।

इसके अतिरिक्त तीनों जिलों में महिला उद्यमियों की औसत मासिक आय का तुलनात्मक विश्लेषण करने के लिए टी-परीक्षण का उपयोग किया गया। अध्ययन के अनुसार धार जिले की महिला उद्यमियों की औसत आय ₹22,400, झाबुआ जिले की ₹20,800 तथा अलीराजपुर जिले की ₹19,600 पाई गई। टी-परीक्षण का मान ($t = 3.24$, $p < 0.05$) प्राप्त हुआ, जो यह दर्शाता है कि तीनों जिलों में महिला उद्यमियों की आय में सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर मौजूद है। अतः प्रस्तुत परिकल्पना H2 भी अस्वीकृत की जाती है। समग्र रूप से अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि ग्रामीण महिला उद्यमिता आर्थिक विकास का एक महत्वपूर्ण साधन बन सकती है। यदि महिलाओं को शिक्षा, प्रशिक्षण, वित्तीय सहायता तथा बाजार तक उचित पहुँच उपलब्ध कराई जाए, तो वे न केवल अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ कर सकती हैं बल्कि क्षेत्रीय आर्थिक विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दे सकती हैं। विशेष रूप से आदिवासी बहुल जिलों में महिला उद्यमिता को प्रोत्साहित करना ग्रामीण विकास और समावेशी आर्थिक प्रगति के लिए अत्यंत आवश्यक है।

GYAN MANTHAN
A MULITIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

संदर्भ सूची

1. Schumpeter, J. A. (1934). *The Theory of Economic Development*. Harvard University Press.
2. Bose, A. (1953). *Studies in Indian Rural Economy*. Calcutta University Press.
3. Jain, D. (1980). *Women, Development and the UN*. United Nations Publications.
4. Desai, V. (1999). *Dynamics of Entrepreneurial Development*. Himalaya Publishing House.
5. Nair, T. (2005). Women and Microfinance: The Experience of Self Help Groups in India. *Economic and Political Weekly*.
6. Datta, S., & Gaikwad, V. (2007). Women Entrepreneurship and Rural Development. *Journal of Rural Development*.
7. Kunwar, R., & Singh, P. (2010). Microfinance and Women Empowerment in Rural India. *Indian Journal of Economics*.
8. Pandey, R. (2012). Tribal Women Entrepreneurship in Madhya Pradesh. *Indian Journal of Social Research*.
9. Sharma, R., & Verma, S. (2014). Women Entrepreneurship and Economic Empowerment. *International Journal of Social Sciences*.
10. Gupta, S. (2015). Rural Women Entrepreneurship and Development. *Journal of Rural Studies*.
11. Kumar, A. (2017). Role of Women Entrepreneurs in Rural Economy. *Indian Journal of Commerce*.
12. Mishra, P. (2018). Women Entrepreneurship and Social Change. *Journal of Social Research*.

GYAN MANTHAN
A MULITIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

13. Patil, S., & Deshmukh, R. (2019). Women Entrepreneurs and Economic Development. *International Journal of Management Studies*.
14. Singh, R., & Yadav, K. (2020). Women Entrepreneurship in Rural India. *Journal of Entrepreneurship Development*.
15. Sharma, P. (2021). Women Entrepreneurship and Inclusive Growth. *Indian Journal of Development Studies*.
16. Tiwari, A. (2022). Women Entrepreneurship and Rural Development in India. *Journal of Economic Studies*.
17. Government of India (2021). *Women Entrepreneurship in India Report*. Ministry of MSME.

GYAN MANTHAN
A MULITIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL